राजस्थान बोर्ड परीक्षा 2019–20
10वीं कक्षा
हिन्दी
मॉडल पेपर–7

समय : $3\frac{1}{4}$ घंटे **(पूर्णांक : 80)**

परीक्षार्थियों के लिये सामान्य निर्देश :–

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न–पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर–पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

खण्ड–अ

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

स्वतंत्र भारत का संपूर्ण दायित्व आज विद्यार्थियों के ही ऊपर है क्योंकि आज जो विद्यार्थी हैं, वे ही कल स्वतंत्र भारत के नागरिक होंगे। भारत की उन्नति और उसका उत्थान उन्हीं की उन्नति और उत्थान पर निर्भर करता है। अतः विद्यार्थियों को चाहिए कि वे अपने भावी जीवन का निर्माण बड़ी सतर्कता और सावधानी के साथ करें। उन्हें प्रत्येक क्षण अपने राष्ट्र, अपने समाज, अपने धर्म, अपनी संस्कृति को अपनी आँखों के सामने रखना चाहिए ताकि उनके जीवन से राष्ट्र को बल प्राप्त हो सके। जो विद्यार्थी राष्ट्रीय दृष्टिकोण से अपने जीवन का निर्माण नहीं करते, वे राष्ट्र और समाज के लिए भारस्वरूप हैं।

1. प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर :
गद्यांश का उचित शीर्षक– **राष्ट्र–निर्माण में विद्यार्थियों की भूमिका**।

2. कैसे विद्यार्थी राष्ट्र और समाज के लिए भारस्वरूप हैं? 1

उत्तर :
जो विद्यार्थी राष्ट्रीय दृष्टिकोण से अपने जीवन का निर्माण नहीं करते, वे राष्ट्र और समाज के लिए भारस्वरूप हैं।

3. स्वतंत्र भारत का दायित्व किस पर है? 2

उत्तर :
स्वतंत्र भारत का दायित्व विद्यार्थियों पर है।

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

इस समाधि में छिपी हुई है
एक राख की ढेरी।
जलकर जिसने स्वतंत्रता की
दिव्य आरती फेरी।।
यह समाधि, यह लघु समाधि, है
झाँसी की रानी की।

अंतिम लीला–स्थली यही है
लक्ष्मी मर्दानी की।।
यहीं कहीं पर बिखर गई वह
भग्न विजय–माला–सी।

उसके फूल यहाँ संचित हैं
है वह स्मृति–शाला सी।।
सहे वार पर वार अंत तक
लड़ी वीर बाला–सी।
आहुति–सी गिर चढ़ी चिता पर
चमक उठी ज्वाला–सी।।

बढ़ जाता है मान वीर का
रण में बलि होने से
मूल्यवती होती सोने की
भस्म यथा सोने से।।

4. कविता में किसकी समाधि का जिक्र हो रहा है? इसकी क्या विशेषता है? 1

उत्तर :
इस कविता में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की समाधि का जिक्र हो रहा है। यहाँ प्रत्यक्ष रूप से राख की ढेरी दिखाई देती है, पर इसमें स्वतंत्रता की चिंगारी छिपी है।

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

5. यहाँ रानी किस रूप में बिखर गई थी? 1

उत्तर :
यहाँ रानी टूटी विजय माला के समान बिखर गई। उसके फूल यहाँ अभी तक संचित हैं।

6. बलिदान देने से पूर्व रानी ने किस प्रकार युद्ध किया था? 2

उत्तर :
बलिदान देने के पूर्व तक रानी ने युद्ध किया। उसने शत्रु के वार-पर-वार सहे। वह आहुति-सी चिता पर गिरी।

खण्ड-ब

7. दिए गए बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए। 8

1. सदाचार का महत्त्व या सदाचार ही जीवन है
   (क) प्रस्तावना
   (ख) सदाचार एक मित्र के रूप में
   (ग) सदाचारी व्यक्ति के गुण
   (घ) जीवन में सदाचार का महत्त्व
   (ङ) प्रमुख सदाचारी व्यक्ति
   (च) उपसंहार
2. दीपावली
   (क) प्रस्तावना
   (ख) ऐतिहासिक आधार
   (ग) दीपावली पर्व की तैयारी
   (घ) मनाने की विधि
   (ङ) कुप्रथा
   (च) उपसंहार
3. स्वच्छता का महत्त्व
   (क) स्वच्छता क्या है?
   (ख) स्वच्छता के प्रकार
   (ग) स्वच्छता के लाभ
   (घ) स्वच्छताः हमारा योगदान
   (ङ) उपसंहार
4. चुनाव का एक दृश्य या चुनाव की हलचल
   (क) चुनाव का आशय
   (ख) लोकतंत्र में चुनाव का महत्त्व
   (ग) चुनाव के दिनों में दिखाई देने वाला दृश्य
   (घ) प्रमुख राजनीतिक दल एवं मतदान दिवस
   (ङ) उपसंहार

उत्तर :

1. सदाचार का महत्त्व या सदाचार ही जीवन है

(क) **प्रस्तावना –** मानव-जीवन में विभिन्न गुण होते हैं। सदाचार उनमें से सर्वोत्तम गुण है। सदाचार से हमारा तात्पर्य अच्छा व्यवहार अथवा अच्छे आचरण से है। इससे मनुष्य की हर स्थान पर और हर समय वन्दना की जाती है। इसके अभाव में मनुष्य को कहीं भी सम्मान प्राप्त नहीं हो सकता। किसी विद्वान् ने ठीक ही कहा है, **यदि धन नष्ट हो जाए तो कुछ भी नष्ट नहीं होता, यदि स्वास्थ्य नष्ट हो जाए तो कुछ नष्ट हुआ समझना चाहिए, मगर यदि चरित्र या आचरण नष्ट हो जाए तो सब कुछ नष्ट हो जाता है।** सदाचार के सामने दुनिया की बड़ी-बड़ी वस्तु भी तुच्छ है।

(ख) **सदाचार एक मित्र के रूप में–** सदाचार मानव का सबसे बड़ा मित्र होता है। सदाचारी व्यक्ति में आत्म-विश्वास और धैर्य होता है। वह साहसी होने के कारण असफलता पर भी धैर्य नहीं खोता। वह बेईमानी और हेरा-फेरी से हमेशा दूर रहता है। उसकी भावनाएँ पवित्र होती हैं। उसका मन सदैव शान्त एवं प्रसन्न रहता है। वह जानता है कि दूसरों को कष्ट देना या धोखा देना सदाचार के मार्ग से दूर हटना है। सभी सन्तों, विद्वानों और विचारकों ने मुक्त कण्ठ से सदाचार के गीत गाए हैं।

(ग) **सदाचारी व्यक्ति गुण–** सदाचारी व्यक्ति में विभिन्न गुण होते हैं। वह सत्य का पालन करने वाला होता है। वह सांसारिक बंधनों अथवा मोह में नहीं फँसता। उसमें काम, क्रोध, मद, लोभ आदि पंचविकारों का अभाव होता है। वह अभिमानी नहीं होता। वह स्पष्टवादी होने पर भी दूसरों की भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाता। वह सदा परोपकार में लगा रहता है। वह दूसरों के कष्टों को सुलझाने के लिए हर समय तत्पर रहता है।

(घ) **जीवन में सदाचार का महत्त्व–** जीवन में सदाचार का अत्यधिक महत्त्व है। सदाचार के अभाव में मानव तथा शत्रु में भेद स्थापित करना कठिन है। सदाचार के बल पर ही मानव सर्वोच्च प्राणी माना गया है। हमारे ऋषियों को सदाचारी होने के कारण ही इतना मान तथा सम्मान मिलता है। इसी गुण के कारण ही वे मार्गदर्शक बन सके हैं। गोखले, तिलक, गाँधी आदि नेता सदाचारी होने के कारण जनता के कंठहार बन सके। संसार सदैव सदाचारी का सम्मान करता है। लोगों के हृदय में उसके प्रति श्रद्धा होती है। उसका जीवन सुखी और शान्तमय होता है। सदाचारी व्यक्ति के सत्संग से सद्गुणों का विकास होता है। उनकी संगति से मार्ग से भटका हुआ व्यक्ति भी सन्मार्ग पर चलने लगता है।

(ङ) **प्रमुख सदाचारी व्यक्ति–** भारत-भूमि ने अनेक सदाचारी व्यक्तियों को जन्म दिया है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम सदाचार की साकार प्रतिमा थे। शिवाजी तथा महाराणा प्रताप के उज्जवल चरित्र से भारत का इतिहास आलोकित है। स्वामी रामतीर्थ, दयानन्द, विवेकानन्द आदि ऋषियों ने देश-विदेश का भ्रमण करके सदाचार की मशाल को प्रज्वलित किया।

(च) **उपसंहार–** सार रूप में कहा जा सकता है कि सदाचार के पालन के बिना मानव-जीवन का कोई मोल नहीं वह व्यर्थ है। उत्तम चरित्र के लिए सदाचारी होना नितान्त अनिवार्य है। सदाचारी न होने से मनुष्य को अनेक कष्टों को सहन करना पड़ता है। सदाचारी व्यक्ति का प्रभाव आने वाली पीढ़ियों पर भी पड़ता है। उसके भौतिक शरीर के नष्ट होने पर भी उसके विचार एवं आदर्श समाज को सदैव मार्गदर्शन करवाते रहते हैं। सदाचार ही किसी राष्ट्र, समाज, परिवार और व्यक्ति की सामाजिक उन्नति का मूल स्रोत है। सदाचारी व्यक्तियों का हर युग में सम्मान होता रहता है भविष्य में भी होता रहेगा।

2. दीपावली

(क) **प्रस्तावना –** भारत त्योहारों का देश है। प्रत्येक ऋतु में किसी-न-किसी त्योहार को मनाया जाता है। भारत में फसलों के पकने पर भी त्योहार मनाए जाते हैं। महापुरुषों के जन्मदिन को भी

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें। आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाऐंगे।

त्योहारों की भाँति बड़े उत्साह से मनाया जाता है। भारत के मुख्य त्योहारों–रक्षा बंधन, दशहरा, दीपावली और होली आदि में दीपावली अत्यंत प्रसिद्ध त्योहार है। इसे बड़े जोश एवं उमंग के साथ मनाया जाता है। दीपावली का अर्थ है–**दीपों की पंक्ति**। यह त्योहार कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है। अमावस्या की रात अन्धेरी होती है किंतु भारतीय घर–घर में दीप जलाकर उसे पूर्णिमा से भी अधिक उजियाली बना देते हैं। इस त्योहार का बड़ा महत्त्व है।

(ख) **ऐतिहासिक आधार–** इस त्योहार का ऐतिहासिक आधार अत्यधिक महत्त्वपूर्ण एवं धार्मिक है। इस दिन भगवान् राम लंका–विजय करके अपना वनवास समाप्त करके लक्ष्मण और सीता सहित जब अयोध्या आए तो नगरवासियों ने अति हर्षित होकर उनके स्वागत के लिए रात्रि को नगर में दीपमाला करके अपने आनन्द और प्रसन्नता को प्रकट किया। दीपावली का त्योहार आर्यसमाजी, जैनी और सिक्ख लोग भी विभिन्न रूपों में बड़े उमंग से मनाते हैं। इसी दिन आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने महासमाधि ली थी और इसी दिन जैन धर्म के तीर्थंकर महावीर स्वामी ने निर्वाण प्राप्त किया था। इसी प्रकार सिक्ख अपने छठे गुरु की याद में इस त्योहार को मानते हैं जिन्होंने इसी दिन बन्दी गृह से मुक्ति प्राप्त की थी।

(ग) **दीपावली पर्व की तैयारी–** इस पर्व की तैयारी घरों की सफाई से प्रारम्भ होती है जो कि लोग एक–आध मास पूर्व प्रारम्भ कर देते हैं। लोग शरद् ऋतु के आरंभ में घरों की लिपाई–पुताई करवाते हैं और कमरों को चित्रों से अलंकृत करते हैं। इससे मक्खी, मच्छर दूर हो जाते हैं। इससे कुछ दिन पूर्व अहोई माता का पूजन किया जाता है। धन त्रयोदशी के दिन लोग पुराने बर्तन बेचते हैं और नए खरीदते हैं। चतुर्दशी को लोग घरों का कूड़ा–करकट बाहर निकालते हैं। लोग कार्तिक मास की अमावस्या को दीपमाला करते हैं।

(घ) **मनाने की विधि–** इस दिन कई लोग अपने इष्ट संबंधियों में मिठाईयाँ बाँटते हैं। बच्चे नए–नए वस्त्र पहनकर बाजार जाते हैं। रात को पटाखे तथा आतिशबाजी चलाते हैं। अत्यधिक लोग रात को लक्ष्मी पूजा करते हैं। कई लोगों का विचार है कि इस रात लक्ष्मी अपने श्रद्धालुओं के घर जाती है। इसलिए प्रायः लोग अपने घर के द्वार उस रात बंद नहीं करते ताकि लक्ष्मी लौट न जाए। व्यापारी लोग वर्षभर के खातों की पड़ताल करते हैं और नई बहियाँ लगाते हैं।

(ङ) **कुप्रथा–** दीपावली के दिन जहाँ लोग शुभ कार्य एवं पूजन करते हैं वहाँ कुछ लोग जुआ खेलते हैं। जुआ खेलने वाले लोगों का विश्वास है कि यदि इस दिन जुए में जीत गए तो फिर वर्ष भर जीतते रहेंगे तथा लक्ष्मी की उन पर कृपा बनी रहेगी। कहीं–कहीं पटाखों को लापरवाही से बजाते समय बच्चों के हाथ–पाँव भी जल जाते हैं और कहीं–कहीं पटाखों के कारण आग लगने की दुर्घटना भी होती है। अतः इस पावन पर्व को हमें सदा सावधानी से मनाना चाहिए।

(च) **उपसंहार–** दीपावली का त्योहार मानव जाति के लिए शुभ काम करने की प्रेरणा देने वाला है। जैसे दीपक जल कर अन्धकार को समाप्त करके प्रकाश फैला देता है, वैसे ही दीपावली भी अज्ञानता के अन्धकार को हटाकर ज्ञान का प्रकाश हमारे मन में भर देती है। देश और जाति की समृद्धि का प्रतीक यह त्योहार अत्यन्त पावन और मनोरम है।

3. स्वचछता का महत्त्व

(क) **स्वच्छता क्या है?– स्वच्छ** शब्द का अर्थ है– अत्यन्त साफ, विशुद्ध उज्जवल एवं स्वस्थ। **ता** प्रत्यय जोड़ने पर भाववाचक **स्वच्छता** शब्द आशय सब प्रकार से साफ–सफाई, निर्मलता एवं पवित्रता है। मन–हृदय की, शरीर एवं वस्त्रों की घर–बाहर, पानी–वायु–भूमि आदि की निर्मलता या सफाई रखना ही स्वच्छता है। स्वच्छता अच्छे स्वास्थ्य, अच्छे संस्कार एवं सुसभ्यता की निशानी है। इससे मानव के उत्तम आचार–विचार का पता चलता है। गन्दगी न रखना या गन्दगी से घृणा रखकर उसे दूर करना ही स्वच्छता है।

(ख) **स्वच्छता के प्रकार–** स्वच्छता के विभिन्न प्रकार हैं, जैसे मन और शरीर की स्वच्छता, घर–आंगन की स्वच्छता, पेयजल एवं भूमि की स्वच्छता, वायुमण्डल एवं पर्यावरण की स्वच्छता, ये सब स्वच्छता के भेद हैं। महात्मा गाँधी ने अपने पत्रों के माध्यम से स्वच्छता के महत्त्व पर सुन्दर विचार व्यक्त किये थे। हमारे देश में स्वच्छता के प्रति अधिक जागरूकता नहीं है, इस कारण देश के अनेक क्षेत्रों में गन्दगी का फैलाव दिखाई देता है और पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। इसी आशय से हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रव्यापी स्वच्छता अभियान का आरम्भ किया है।

(ग) **स्वच्छता के लाभ–** स्वच्छता का सीधा संबंध हमारी सभ्यता एवं स्वास्थ्य से है। खान–पान में स्वच्छता रहने से शरीर स्वस्थ रहता है। घरों के आसपास, सड़कों, नालियों, पोखरों, नदियों आदि में गन्दगी न फैलने से सम्पूर्ण वातावरण स्वच्छ रहता है। इससे रोगाणु नहीं पनपते हैं, अनेक प्रकार के रोग नहीं फैलते हैं, जल एवं वायु में शुद्धता रहती है। इससे मानव तथा अन्य प्राणियों की आयु एवं स्वास्थ्य का स्तर सुधर जाता है। हमारे देश में गन्दगी न रहे तो विदेशी पर्यटक अधिक आ सकते हैं। इससे अनेक प्रकार के लाभ हो सकते हैं।

(घ) **स्वच्छताः हमारा योगदान–** हमें अपने देश को स्वच्छ बनाये रखने के लिए घर से लेकर सार्वजनिक स्थानों तक सर्वत्र स्वच्छ रखना चाहिए। खुले में शौच नहीं करना चाहिए, गन्दगी नहीं फैलानी चाहिए, पेयजल को स्वच्छ रखना चाहिए। प्रायः लोग–कूड़ा–कचरा इधर–उधर बिखेर देते हैं, खुले में मल–मूत्र का त्याग करते हैं तथा पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं, परंतु हमें स्वयं ऐसा नहीं करना चाहिए और दूसरों को भी ऐसा करने से रोकना चाहिए। इसमें आपस में सहयोग एवं सहभागिता का प्रयास जरूरी है।

(ङ) **उपसंहार–** स्वच्छता मानव–सभ्यता का एक श्रेष्ठ संस्कार है। स्वच्छता से सम्पूर्ण पर्यावरण को स्वच्छ रखने की चेतना बढ़ती है। भारत में स्वच्छता अभियान एक अच्छी नीति है। सुनागरिक होने के नाते हमें स्वच्छता के प्रचार–प्रसार में योगदान करना चाहिए।

4. चुनाव का एक दृश्य या चुनाव की हलचल

(क) **चुनाव का आशय –** हमारा देश विश्व का सबसे बड़ा प्रजातान्त्रिक देश है। प्रजातन्त्र शासन प्रणाली में चुनाव से आशय लोगों द्वारा चुनाव में खड़े हुए प्रत्याशियों में से अपनी पसंद के प्रत्याशी के पक्ष में मतदान करना है। प्रजातंत्र–शासन में प्रत्येक वयस्क को अपना मत देने का अधिकार होता है, वह अपना मत देकर जनप्रतिनिधि

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

को चुनता है। उसके मताधिकार द्वारा ही लोकसभा, विधानसभा और निचले स्तर पर होने वाले चुनावों में जनप्रतिनिधियों का निर्वाचन होता है।

(ख) **लोकतंत्र में चुनाव का महत्त्व–** अब्राहम लिंकन के अनुसार, **लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए और जनता द्वारा शासन है।** लोकतंत्र में केन्द्र, राज्य एवं स्थानीय निकायों के लिए चुनाव की प्रक्रिया अपनाई जाती है जिसमें जनता अपने मताधिकार द्वारा अपने क्षेत्र के उम्मीदवारों में से किसी एक का चयन जनप्रतिनिधि के रूप में करती है। निर्वाचित जनप्रतिनिधि ही बहुमत के आधार पर राज्य व केन्द्र में अपनी सरकार बनाकर शासन का संचालन करते हैं। अतः लोकतंत्र में चुनाव का अत्यधिक महत्त्व है।

(ग) **चुनाव के दिनों में दिखाई देने वाला दृश्य–** चुनाव के दिनों में चारों ओर अलग ही माहौल दिखाई देता है। जगह–जगह उम्मीदवारों के समर्थन में पोस्टर–बैनर लगे दिखाई देते हैं। राजनैतिक दलों के बड़े–बड़े नेता अपनी बड़ी–बड़ी जनसभाएँ सम्बोधित करते हैं। विभिन्न प्रचार साधनों एवं सामग्रियों में उन्हीं की पार्टी को वोट देने की बात कही जाती है। विभिन्न दलों के पार्टी कार्यकर्त्ता घर–घर जाकर जन–सम्पर्क करते हैं और अपने–अपने पक्ष में मतदान करने की अपील करते हैं।

चौपालों, हाट–बाजारों, बस–अड्डों और पनघटों पर भी चुनाव का ही माहौल दिखाई देता है। जहाँ पर भी चार आदमी एकत्र हो जाते, वहाँ यही चर्चा होती है कि यह जीतेगा और वह हारेगा। चुनाव के दिनों में यह दृश्य सुबह से शाम तक सभी जगह जोर–शोर के साथ दिखाई देता है।

(घ) **प्रमुख राजनीतिक दल एवं मतदान दिवस–** चुनाव में अनेक राजनीतिक दल भाग लेते हैं। कांग्रेस, भारतीय जनता पार्टी, समाजवादी पार्टी, बहुजन समाजवादी पार्टी, शिवसेना, अकाली दल, तृणमूल कांग्रेस, जदयू आदि राजनीतिक दल चुनाव लड़ते हैं। मतदान करने के लिए अनेक मतदान केन्द्र बनाये जाते हैं। मतदान केन्द्र पर पुरूषों और महिलाओं के लिए अलग–अलग बूथ होते हैं। मतदान शुरू होते ही मतदाताओं की अलग–अलग कतार लग जाती है। एक अधिकारी मतदाताओं की बायें हाथ की उँगली पर न मिटने वाली स्याही का एक चिन्ह लगाता है। मतदान दिवस पर सभी मतदाता अपना अमूल्य वोट प्रदान करते हैं। अन्त में विभिन्न उम्मीदवारों के भाग्य का फैसला वोटिंग मशीन में बन्द हो जाता है।

(ङ) **उपसंहार–** चुनाव का माहौल लोकतंत्र का प्रमुख पर्व जैसा है, क्योंकि चुनाव से ही जन–प्रतिनिधियों का चयन होता है और लोकप्रिय सरकार गठित हो पाती है। हमें अपने मताधिकार का उपयोग अवश्य करना चाहिए।

8. स्वयं को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर का कक्षा दसवीं का छात्र रमेश मानते हुए अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को खेल–कूद व्यवस्था सुचारु रूप से करवाने हेतु प्रार्थना–पत्र लिखिए। 4

उत्तर :

सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाचार्य जी,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
जयपुर।

विषय : खेल–कूद व्यवस्था को सुचारु करवाने हेतु प्रार्थना–पत्र।

महोदय,

निवेदन है कि मैं कक्षा दस का छात्र हूँ और विद्यालय की क्रिकेट टीम का कप्तान हूँ। शीघ्र ही क्षेत्रीय खेल–कूद प्रतियोगिताएँ होने को हैं और इस दिशा में हमने अभी तक किसी भी खेल का अभ्यास आरम्भ नहीं किया है। शारीरिक शिक्षा शिक्षक श्री जैन साहब से जब उपर्युक्त विषय में बात हुई तो उन्होंने बताया कि विद्यालय में क्रीड़ा–सामग्री का अभाव है। इसलिए वे खेलों का अभ्यास करवाने में समर्थ नहीं हैं।

मेरा तथा अन्य खिलाड़ियों का आपसे अनुरोध है कि अतिशीघ्र क्रीड़ा–सामग्री क्रय करके खिलाड़ी छात्रों को उपलब्ध करवाने की व्यवस्था करें तथा खेल–कूद व्यवस्था को सुचारु करने हेतु आवश्यक दिशा–निर्देश प्रदान करें जिससे हम अपने–अपने खेलों का समुचित अभ्यास करके विद्यालय को गौरवान्वित कर सकने का अवसर प्राप्त कर सकें।

हमें विश्वास है कि छात्र एवं विद्यालय हित में आप अतिशीघ्र खेल–कूद की व्यवस्था को सुचारु करने हेतु आवश्यक कार्यवाही करेंगे। सधन्यवाद!

आपका आज्ञाकारी छात्र,
रमेश
दिनांक : 27.09.2018 कक्षा–10

अथवा

8. आदर्श विद्या मन्दिर, उदयपुर की ओर से अन्तर्विद्यालयी हिन्दी वाद–विवाद प्रतियोगिता के लिए प्राचार्य सुबोध उच्च माध्यमिक विद्यालय को एक आमंत्रण–पत्र लिखिए, जिसमें प्रतियोगिता हेतु विद्यालय के दो छात्रों को भेजने की सूचना का उल्लेख हो।

उत्तर :

आदर्श विद्या मन्दिर,
उदयपुर।
अन्तर्विद्यालयी हिन्दी वाद–विवाद प्रतियोगिता,
दिनांक : 10–08–2017
प्रतिष्ठा में,
प्राचार्य महोदय,
सुबोध उच्च माध्यमिक विद्यालय,
उदयपुर।
महोदय,

आपको यह सूचना देते हुए अपार हर्ष होता है कि हमेशा की तरह इस वर्ष भी हम 15 अक्टूबर, 2017 को दोपहर 11 बजे से एक अन्तर्विद्यालयी हिन्दी वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कर रहे हैं।

आप अपने विद्यालय के दो वक्ता एक पक्ष में और दूसरा विपक्ष में भेजकर इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग प्रदान करें।

विषयः– इस सदन की सम्मति में कन्या भ्रूण हत्या मानवता पर कलंक है।

विशेषः– प्रतियोगिता के नियम संलग्न हैं।

प्राचार्य,
आदर्श विद्या मन्दिर, उदयपुर।

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें।
आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाऐंगे।

खण्ड–स

9. **रेयान पुस्तक पढ़ता है** वाक्य में कौन–सी क्रिया है? उसकी परिभाषा लिखिए। 2

उत्तर :

वाक्य में सकर्मक क्रिया है। **परिभाषा–** जिस क्रिया के व्यापार या कार्य का फल कर्त्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

10. निम्नलिखित कर्तृवाच्यों को भाववाच्यों में बदलिए– 3

1. हम इतना नहीं चल सकते।
2. सोहन हॉकी से खेल रहा है।
3. अब, चलें।

उत्तर :

1. हमसे इतना नहीं चला जाता।
2. सोहन द्वारा हॉकी से खेला जाता है।
3. अब, चला जाये।

11. द्विगु समास की परिभाषा तथा उदाहरण लिखिए। 2

उत्तर :

जिस समास में पहला पद संख्यावाचक होता है, उसे द्विगु समास कहते है। जैसे–त्रिकोण, दुराहा।

12. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए। $1 \times 2 = 2$

1. हमारा पुराना कार ठीक हो गया।
2. वह लोग आ गए।

उत्तर :

1. हमारी पुरानी कार ठीक हो गई।
2. वे लोग आ गए।

13. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए– $1 \times 2 = 2$

1. कातर ढंग से देखना
2. मन को ढाढ़स देना (हिम्मत बँधाना)

उत्तर :

1. **कातर ढंग से देखना** (डर के भाव से नजर बचाकर देखना)– बिना वजह पिटने पर ड्राइवर मुझे कातर ढंग से देखने लगा।
2. **मन को ढाढ़स देना** (हिम्मत बँधाना)– जब मेरे परीक्षा में कम अंक आए तो माँ ने मेरे मन को ढाढ़स बँधाते हुए कहा कि मैं परिश्रम करके अगली बार की परीक्षा में अच्छे अंक ले सकता हूँ।

14. **कंगाली में आटा गीला** वाक्य में प्रयोग करके इस लोकोक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए। 1

उत्तर :

कंगाली में आटा गीला (मुसीबतों में और मुसीबत आना)– एक तो देवराज के पिताजी की नौकरी चली गई दूसरा उसकी माताजी बीमार हो गई तो सभी ने कहा कंगाली में आटा गीला।

खण्ड–द

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

हरे–हरे ये पात
डालियाँ कलियाँ कोमल गात!
मैं ही अपना स्वप्न–मृदुल–कर
फेरूँगा निद्रित कलियों पर
जगा एक प्रत्यूष मनोहर
पुष्प–पुष्प से तन्द्रालस लालसा खींच लूँगा मैं
अपने नव जीवन का अमृत सहर्ष सींच दूँगा मैं
द्वार दिखा दूँगा फिर उनको
है मेरे वे जहाँ अनन्त–
अभी न होगा मेरा अन्त।

उत्तर :

प्रसंग– प्रस्तुत पद्यांश कवि निराला द्वारा रचित **अभी न होगा मेरा अन्त** कविता से अवतरित है। इसमें कवि ने वसन्त के रूपक के द्वारा अपनी जिजीविषा का भाव व्यक्त किया है।

व्याख्या– कवि निराला कहते हैं कि अभी तो मेरे जीवन में वसंत का आगमन हुआ है। अभी वसन्त के आगमन से हरे–हरे पत्तों और कलियों से डालियों का सुन्दर आकार निखरा ही है। अर्थात् यौवन आने से मेरे शरीर का सुन्दर विकास हुआ ही है। अब मैं ही अपनी मधुर भावनाओं रूपी कोमल हाथों से इन अलसायी हुई कलियों का स्पर्श करूँगा, इन पर अपना हाथ उत्साहपूर्वक फेरूँगा। अब मेरे वसन्त रूपी जीवन में मनोहर नया प्रभात आया है। इस काल में डालियों पर अनेक पुष्प खिल रहे हैं। अधखिले पुष्प मानो तन्द्रा से ग्रस्त हैं तथा आलस्य से ग्रस्त होने पर भी सुन्दर लालसा से मैं इन्हें अपनी ओर खींच लूँगा और अपने नव–जीवन के अमृत से अर्थात् नए उत्साह से युक्त कोमल–मधुर भावनाओं से इन्हें सींच लूँगा। मैं इन्हें बाहर निकलने का द्वार बता दूँगा, इन्हें विकसित होने का मार्ग बता दूँ। जिस प्रकार वसन्तागमन से प्रकृति का असीमित विकास होता है, उसी प्रकार मेरे जीवन में उत्साहयुक्त नवीन लालसाओं एवं कोमल भावनाओं का असीमित फैलाव होगा। इस तरह की आकांक्षा रखने से अभी मेरे जीवन का अन्त नहीं होगा।

विशेष–

1. जीवन को वसंत का रूपक देकर कवि ने यौवनोत्साह की सुन्दर व्यंजना की है।
2. इसमें कर्म–निष्ठा एवं जिजीविषा का जोश व्यक्त हुआ है।
3. तत्सम–प्रधान शब्दावली का प्रयोग हुआ है। अनुप्रास, उपमा एवं मानवीकरण प्रयुक्त हैं।

अथवा

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

मेरे जीवन का यह है जब प्रथम चरण
इसमें कहाँ मृत्यु?
है जीवन ही जीवन
अभी पड़ा है आगे सारा यौवन
स्वर्ण–किरण कल्लोलों पर बहता रे, बालक–मन,
मेरे ही अविकसित राग से
विकसित होगा बन्धु, दिगन्त,

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

अभी न होगा मेरा अन्त।

उत्तर :

प्रसंग– यह पद्यांश कविवर सूर्यकांत त्रिपाठी **निराला** द्वारा रचित **अभी न होगा मेरा अन्त** कविता से अवतरित है। इसमें कवि ने उत्साहपूर्वक जीवन जीने की प्रबल लालसा व्यक्त की है।

व्याख्या– कवि निराला कहते हैं कि अभी यह मेरे जीवन का प्रथम चरण या प्रथम युवावस्था है। इस नव–वसंत रूपी युवावस्था में मृत्यु कहाँ और कैसे हो सकती है? इसमें तो अभी जीवन का नवोत्साह भरा हुआ है। अभी युवावस्था के बाद जीने का लम्बा काल शेष है, सम्पूर्ण जीवन शेष है। अभी तो जीवन रूपी प्रभात में मनोरम भावनाओं की स्वर्ण किरणें बिखर रही हैं और मेरा कोमल मन जीवन–सागर की तरंगों पर प्रसन्नता से बहता जा रहा है। हे बन्धु, मेरे हृदय की अविकसित राग की तरंगों पर प्रसन्नता से बहता जा रहा है। हे बन्धु, मेरे हृदय की अविकसित राग से अर्थात् कल्पनाशील अल्प–विकसित प्रेमिल भावनाओं एवं उल्लासपूर्ण आशाओं से मेरे जीवन रूपी दिशाओं का पूर्ण विकास होगा। मेरी जिजीविषा एवं कर्मनिष्ठा से जीवन का सुन्दर विकास होगा। अभी मेरे समक्ष सम्पूर्ण जीवन पड़ा हुआ है। इसलिए अभी से मेरे जीवन का अन्त नहीं होगा।

विशेष–

1. कवि का आशावादी स्वर, उत्साह–उल्लास तथा जीवन जीने की प्रबल लालसा व्यक्त हुई है।
2. मुक्त छन्द में रचित कविता में तत्सम शब्दावली प्रयुक्त है। सान्त्यानुप्रास एवं रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ है।

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 6

हिन्द महासागर की ऊँची–ऊँची लहरें मेरे आसपास की स्याह चट्टानों से टकरा रही थीं। बलखाती लहरें रास्ते की नुकीली चट्टानों से कटती हुई आती थीं जिससे उनके ऊपर चूरा बूँदों की जालियाँ बन जाती थीं। मैं देख रहा था और अपनी पूरी चेतना से महसूस कर रहा था– शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति। तीनों तरफ से क्षितिज तक पानी–ही पानी था, फिर भी सामने का क्षितिज, हिन्द महासागर का, अपेक्षाया अधिक दूर और अधिक गहरा जान पड़ता था। लगता था कि उस ओर दूसरा छोर है ही नहीं। तीनों ओर के क्षितिज को आँखों में समेटता मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं मैं हूँ, एक जीवित व्यक्ति, दूर से आया यात्री, एक दर्शक। उस दृश्य के बीच में जैसे दृश्य का एक हिस्सा बनकर खड़ा रहा – बड़ी–बड़ी चट्टानों के बीच एक छोटी–सी चट्टान जब अपना होश हुआ, तो देखा कि मेरी चट्टान भी तब तक बढ़ते पानी में काफी घिर गयी है।

उत्तर :

सन्दर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्यपुस्तक में लेखक मोहन राकेश द्वारा रचित **आखिरी चट्टान** शीर्षक पाठ से लिया गया है। लेखक कन्याकुमारी पर्यटन के लिए पहुँचा। कन्याकुमारी के समुद्रतट पर सूर्योदय तथा सूर्यास्त का मनोरम दृश्य उसने देखा। वह केप होटल में ठहरा था। होटल के बाथ टैंक के बायीं तरफ समुद्र में उभरी एक चट्टान पर खड़े होकर वह भारत के स्थल भाग की आखिरी चट्टान को देखता रहा। इस चट्टान पर विवेकानन्द ने समाधि लगाई थी।

व्याख्या– लेखक बता रहा है कि वह जिस चट्टान पर खड़ा था उसके आस–पास की चट्टानों से हिन्द महासागर में उठने वाली लहरें टकरा रही थीं। बलखाती लहरें जब रास्ते की नुकीली चट्टानों से टकराती थीं तो चूर–चूर होकर बिखर जाती थीं। उनकी छोटी–छोटी बूँदों से चट्टानों के ऊपर एक जाली–सी बन जाती थी। लेखक को सागर का अनन्त विस्तार दिखाई दे रहा था। विस्तृत सागर के साथ ही शक्तिशाली लहरें भी दूर तक उठती दिखाई दे रही थीं। सागर और लहरों के इस विस्तार और शक्ति को लेखक देख रहा था और अनुभव भी कर रहा था। तीन दिशाओं में क्षितिज तक सागर की जलराशि फैली थी। सामने वाला हिन्द महासागर का क्षितिज अपेक्षाकृत ज्यादा दूर और गहरा जान पड़ता था। ऐसा लगता था कि उस तरफ उसका दूसरा छोर नहीं था। लेखक अपनी आँखों से तीनों तरफ के क्षितिज को देख रहा था। वह इस दृश्य में पूरी तरह खो गया था तथा अपना अस्तित्व भी भूल गया था। उस विस्तृत जलराशि को देखने में वह ऐसे ध्यानमग्न था कि उसे पता ही नहीं था कि वह दूर से समुद्र में सूर्यास्त देखने आया हुआ एक पर्यटक था। वह एक जीवित मनुष्य और दर्शक था। वह स्वयं को उस दृश्य का एक हिस्सा समझ रहा था। वहाँ स्थित बड़ी–बड़ी चट्टानों के बीच एक छोटी चट्टान के समान वह उस दृश्य का अंग बन गया था। उसका ध्यान उस समय टूटा जब उसने देखा कि वह जिस चट्टान पर खड़ा था वह समुद्र के बढ़ते हुए पानी से घिर चुकी थी।

विशेष–

1. विवेकानन्द शिला के पास के समुद्र का प्राकृतिक सौन्दर्य उद्घाटित हुआ है।
2. विशाल जलराशि के आकर्षण में पड़ा हुआ लेखक अपने अस्तित्व को ही भूल गया है।
3. सरल, प्रवाहपूर्ण तथा विषयानुरूप भाषा का प्रयोग हुआ है।
4. शैली वर्णानात्मक तथा चित्रात्मक है।

अथवा

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 6

जल्दी–जल्दी चलते हुए मैंने एक के बाद एक कई टीले पर किये। टाँगे थक रही थीं, पर मन थकने को तैयार नहीं था। हर अगले टीले पर पहुँचने पर लगता कि शायद अब एक ही टीला और है, उस पर पहुँचकर पश्चिमी क्षितिज का खुला विस्तार अवश्य नजर आ जाएगा, और सचमुच एक टीले पर पहुँचकर वह खुला विस्तार सामने फैला दिखाई दे गया– वहाँ से दूर तक रेत की लम्बी ढलान थी, जैसे वह टीले से समुद्र में उतरने का रास्ता हो। सूर्य तब पानी से थोड़ा ही ऊपर था। अपने प्रयत्न की सार्थकता से संतुष्ट होकर मैं टीले पर बैठ गया– जैसे वह टीला संसार की सबसे ऊँची चोटी हो, और मैंने, सिर्फ मैंने, उस चोटी को पहली बार सर किया हो।

उत्तर :

सन्दर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्यपुस्तक में लेखकर मोहन राकेश द्वारा रचित **आखिरी चट्टान** शीर्षक पाठ से लिया गया है। लेखक कन्याकुमारी के समुद्रतट पर सूर्यास्त देखने पहुँचा। वह सैंड हिल पहुँचा जहाँ अनेक दर्शक उपस्थित थे। मगर वह किसी ज्यादा खुले हुए विस्तार से सूर्यास्त देखना चाहता था। सैंड हिल से आगे एक टीला था। लेखक वहाँ पहुँचा, फिर उसके आगे के अनेक टीलों को पार करके वह एक ऐसे टीले पर पहुँचा जहाँ से सागर का स्पष्ट विस्तार दिखाई देता था।

व्याख्या– लेखक कहता है कि वह जल्दी–जल्दी चल रहा था। स्पष्ट विस्तार की खोज में वह एक के बाद एक टीले को पार कर रहा था। अनेक टीलों को पार करके आगे बढ़ते रहने के कारण उसके पैर थक गए थे। परंतु उसके मन में थकान नहीं थी। जब वह आगे वाले टीले पर

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें। आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाऐंगे।

पहुँचता था तो उसे लगता था कि अभी एक टीला आगे और है जहाँ पहुँचकर खुले क्षितिज का स्पष्ट विस्तार जरूर देखा जा सकता था। अन्त में ऐसा ही हुआ। वह एक टीले पर पहुँचा। वहाँ से क्षितिज का खुला विस्तार सामने फैला दिखाई दिया। वहाँ से दूर तक रेत का लम्बा ढाल था। वह टीले से समुद्र में उतरने के लिए बने रास्ते जैसा लग रहा था। उस समय सूर्य पानी की सतह से थोड़ा ऊपर ही था। लेखक का प्रयास सफल हुआ। वह संतुष्ट था। वह टीले पर बैठ गया। उसको ऐसा लग रहा था कि वह टीला रेत का टीला न होकर कोई उँची पर्वत–चोटी हो जिस पर चढ़ने में सफल होने वाला वही एकमात्र व्यक्ति हो।

विशेष–

1. सरल सुबोध और विषयानुकूल भाषा का प्रयोग हुआ हैं।
2. शैली वर्णनात्मक है।
3. लेखक एक ऐसे स्थान की खोज में था जहाँ से सूर्यास्त का विस्तार स्पष्ट रूप से दिखता हो।
4. अन्त में अनेक रेतीले टीले पार करने पर उसे एक इच्छित टीला मिल ही गया।

17. अभी न होगा मेरा अन्त कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए। 6

उत्तर :

अभी न होगा मेरा अन्त कविता में कवि निराला ने जीवन की युवावस्था को अभिव्यक्त करते हुए हृदय की जीवंतता को प्रकट किया है। जीवन रूपी वन में वसंत रूपी हृदयोत्साह कभी भी समाप्त होने वाला नहीं है। जीवन का यह पड़ाव अर्थात् युवावस्था हाथ पर हाथ रखकर बैठने के लिए न होकर जीवन के कर्म–सौन्दर्य को बढ़ाते रहने के लिए है। यौवनावस्था में जबकि आगे जीवन ही जीवन हो। मृत्यु की बात सोची भी नहीं जा सकती। इस अवस्था में तो युवक का मन भी बालक के मन की तरह जल तरंगों पर क्रीड़ा करती हुई सूर्य की किरणों के समान मचलने लगता है। कवि को विश्वास है कि उसके ही इन अविकसित गीतों से दिशाओं के अंत तक सब ओर विकास दृष्टिगोचर होने लगेगा।

अथवा

17. मातृ–वन्दना कविता का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए। 6

उत्तर :

मातृ–वन्दना कविता में निराला जी ने अपने राष्ट्र–प्रेम को व्यक्त किया है। कवि अपने अर्जित सभी कर्म फलों को अपने तन, मन और धन को माँ भारती के चरणों में समर्पित कर अपने को धन्य महसूस करता है। कवि जीवन–पथ के सभी विघ्न–बाधाओं का सामना करते हुए माँ की सेवा में अपना बलिदान कर उसे हर दुःख से मुक्त करना चाहता है। उसे स्वतंत्र कराना चाहता है। उसकी अचल प्रतिमा को अपने हृदय–मन्दिर में प्रतिष्ठित करना चाहता है। प्रस्तुत कविता मातृभूमि के चरणों में अपना सर्वस्व न्योछावर करने की प्रेरणा देती है।

18. दादू के देशाटन एवं उनसे जुड़े पावन तीर्थों पर प्रकाश डालिए। 6

उत्तर :

ऐसी मान्यता है कि दादू अठारह वर्ष की अवस्था तक अहमदाबाद में रहे। फिर छह वर्ष तक मध्यप्रदेश में घूमते रहे, उसके बाद राजस्थान के सांभर में आकर बस गए। सांभर में रहने के बाद वे आमेर (जयपुर) में रहे, जहाँ पर एक सुन्दर दादू द्वारा बना हुआ है। ऐसी मान्यता है कि दादू ने फतेहपुर सीकरी में बादशाह अकबर से भेंट की और चालीस दिनों तक आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा करते रहे। फिर वे अन्य सन्तों की तरह उत्तर भारत में काशी, बिहार, बंगाल आदि क्षेत्रों की यात्राएँ करते रहे। इस तरह यात्रा करते हुए वे नरैणा में आये और एक खेजड़े के वृक्ष के नीचे बैठकर साधना करते रहे। उसके बाद वे भैंराणा में आये। वहीं पर उनका देहान्त हुआ, तो उनका शव भैंराणा की पहाड़ी की गुफा में रखा गया । वहीं पर उनके अन्य अवशेष, तूंबा, चोला तथा खड़ाऊँ भी रखी गई।

सन्त दादू जहाँ–जहाँ पर रहे, वहीं पर उनके शिष्यों तथा दादू पंथ के लोगों ने सुन्दर मन्दिर, दादू द्वारा, भुंजनशाला आदि का निर्माण कराया। वे सर्वप्रथम करडाला (कल्याणपुर) में रहे, फिर सांभर, आमेर, नरैणा और भैंराणा में रहे। दादूपंथ में इन पाँचों स्थानों को पावन पंचतीर्थ माना जाता है।

अथवा

18. सन्त दादूदयाल के चरित्र से क्या शिक्षा मिलती है? बताइये। 6

उत्तर :

लोक संत दादूदयाल के चरित्र से यह शिक्षा मिलती हे कि हमें जाति–पाँति का भेदभाव नहीं रखना चाहिए। दूसरों की निन्दा करने से बचना चाहिए, क्योंकि जो दूसरों की निन्दा करता है, उसके हृदय में राम अर्थात् ईश्वर का निवास नहीं होता है। जीवन में गरीबी आने, सुख–सम्पत्ति का अभाव रहे तथा विपरीत स्थिति रहे तब भी भगवान की आराधना से विमुख नहीं होना चाहिए और सदैव मानव–कल्याण के लिए प्रयास करते रहना चाहिए। मनुष्य को मन, वचन और कर्म से परमात्मा का ध्यान–अर्चन करना चाहिए, परंतु उसमें दिखावा या ढोंग बिल्कुल भी नहीं करना चाहिए। दादू की शिष्य–परम्परा में हिन्दुओं के साथ मुसलमान भी रहे, परंतु दादू ने कभी जाति–पाँति में भेद–भाव नहीं किया। दादू ने कबीर की तरह खण्डन–मण्डन का कठोर स्वर कम ही व्यक्त किया? इस कारण उन्होंने प्रेम–व्यवहार को प्रधानता दी और सामान्य जनता को सहज–सरल मार्ग पर चलने का सन्देश दिया। इस तरह दादूदयाल के चरित्र से हमें आत्म–परिष्कार के साथ ही निर्गुण–साधना की शिक्षा मिलती है। इसके साथ ही शान्त रहकर सहज व्यवहार करने की शिक्षा भी मिलती है।

19. 'चतुरंग–दल' से सेनापति का क्या तात्पर्य है? 2

उत्तर :

चतुरंग दल से सेनापति का तात्पर्य चारों अंगों वाली सेना से है, जिसमें हाथी, घोड़े, रथ एवं पैदल सैनिक शामिल हों।

20. प्रकृति–पद्मिनी के अंशुमाली से कवि का क्या तात्पर्य है? 2

उत्तर :

प्रकृति रूपी कमलिनी सूर्य को देखकर खिलती है, विकसित होती है। सूर्य ही कमलिनी के प्राण और उसका जीवन सर्वस्व है। वह उसी के प्रेम मय प्रकाश से खिलती है, जीवन प्राप्त करती है। इसी प्रकार सभी मनुष्य और प्राणी ईश्वर के प्रेममय प्रकाश से ही जीवन प्राप्त करते हैं। उनकी वृद्धि और विकास होता है।

21. आपके विचार से माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

मत दिखाई देना? 2

उत्तर :

माँ चाहती है कि उसकी लड़की स्वभाव से भोली, सरल और कोमल बनी रहे। वह स्वार्थी, चालाक और झगड़ालू न बने। साथ ही वह उसे ससुराल वालों के शोषण से भी बचाना चाहती है। लड़की में सहज कोमलता और सुकुमारता होती है, जो उसकी कमजोरी बन जाती है। लोग इस कोमलता को उसकी कमजोरी मानकर उस पर अत्याचार करने लगते हैं। अतः माँ ने कहा कि लड़की होना, पर लड़की जैसी दिखाई मत देना, तभी वह दूसरों के अत्याचारों और शोषण से बच सकती है।

22. **ईदगाह** मुंशी प्रेमचंद की बाल–मनोविज्ञान को चरितार्थ करने वाली एक प्रतिनिधि कहानी है। स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर :

ईदगाह कहानी में हामिद आदि अन्य बालकों के ईद के त्यौहार को लेकर मन में उत्पन्न खुशी, मेले में जाने वाले मार्ग पर पेड़ों में लगे आम, लीचियों को देखकर उन पर निशाना साधना, माली का आना, बालकों द्वारा हँसना, कॉलेज, अदालत, क्लब–घर को देखकर उसके संबंध में विभिन्न प्रकार की बातें करना, मेले में पहुँच कर हामिद के साथियों द्वारा खिलौने खरीदना, मिठाइयाँ लेकर खाना, हामिद का ललचाना, हामिद द्वारा चिमटा खरीदना, साथियों द्वारा उसे चिढ़ाना, हामिद के तर्कों से साथियों का परास्त होना तथा मेले को लेकर पुलिस, वकील, जिन्नात आदि पर बातें करना आदि के आधार पर कहा जा सकता है कि **ईदगाह** कहानी बाल मनोविज्ञान को चरितार्थ करने वाली एक प्रतिनिधि कहानी है।

23. लेखक के पड़ोसी वकील के मन में कौन–सा दाह है? 2

उत्तर :

लेखक का पड़ोसी वकील सब सुविधाओं से सम्पन्न व सुखी है, किन्तु उसके बगल में जो बीमा एजेन्ट रहता है, उसके धन–वैभव की वृद्धि को देखकर वकील साहब का कलेजा जलता है। भगवान् ने उसे जो सुख आदि दे रखा है, उसे वकील पर्याप्त नहीं मानता है। वह निरन्तर इस चिन्ता में रहता है कि काश, बीमा एजेन्ट की मोटरगाड़ी, उसकी मासिक आय और उसकी तड़क–भड़क भरी जीवन शैली मेरी भी होती। इस तरह उसके मन में ईर्ष्या का दाह है।

24. दुपहिया वाहन चलाते समय किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है? 2

उत्तर :

दुपहिया वाहन चलाते समय निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है–

1. दुपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट अवश्य पहनना चाहिए।
2. हेलमेट अच्छी क्वालिटी का होना चाहिए।
3. शराब के नशे में वाहन नहीं चलाना चाहिए।
4. वाहन चलाते समय कानों में संगीत के उपकरणों का या मोबाइल का उपयो

ग नहीं करना चाहिए।

5. दुपहिया वाहन निर्धारित गति से चलाने चाहिए।
6. वाहन में तेल, लाइट एवं टायरों में हवा आदि की अच्छी तरह जाँच कर लेनी चाहिए।
7. वाहन चलाने का लाइसेन्स अवश्य होना चाहिए।

25. 'अभी न होगा मेरा अन्त' कविता में कवि की कौन–सी भावना व्यक्त हुई है? 1

उत्तर :

उक्त कविता में कवि की आस्था, आशा एवं जिजीविषा की भावना व्यक्त हुई है।

26. **फेरूँगा निद्रित कलियों पर** पंक्ति में निद्रित कलियों का आशय क्या है? 1

उत्तर :

इस पंक्ति में निद्रित कलियों का आशय है कि जो निराशारूपी आलस्य में अपने यौवन के उत्साह को भूल गये हैं। उन्हें सुन्दर स्वप्नों के आशावादी दृष्टिकोण से जाग्रत करूँगा।

27. **गाय करूणा की कविता है** किसका कथन है? 1

उत्तर :

गाय करूणा की कविता है– यह गाँधी जी का कथन है।

28. 'साँसों का सूर्य अस्त हो जाने' का क्या भाव है? 1

उत्तर :

उक्त पंक्ति का भाव मृत्यु को प्राप्त करना है।

29. सूर्यकान्त त्रिपाठी **निराला** का संक्षिप्त परिचय दीजिए। 4

उत्तर :

काव्य–चेतना की दृष्टि से महाप्राण निराला को मूलतः छायावादी माना जाता है। इनका प्रारम्भिक जीवन अत्यधिक संघर्षमय रहा। इनका जन्म बंगाल के मेदिनीपुर जिले में हुआ था। परिवार के आत्मीय जनों की असामयिक मृत्यु ने इन्हें तौड़ दिया था। ये अनेक मुश्किलों तथा विषम परिस्थितियों में भी जीवन–पथ पर बढ़ते हुए काव्य–रचना करते रहे। सर्वप्रथम इनकी कविताएँ **मतवाला** पत्रिका में प्रकाशित होती रहीं। फिर स्वतन्त्र रूप से इनका साहित्य प्रकाश में आया। समालोचक इन्हें यथार्थवादी, आदर्शवादी, निराशावादी, आनन्दवादी तथा प्रगतिवादी महाकवि मानते हैं। वस्तुतः निराला के साहित्यिक व्यक्तित्व में ये सभी विशेषताएँ समाविष्ट रही हैं। साथ ही वे मानवतावाद, सामाजिक चेतना, राष्ट्रीय भावना, नारी–भावना, लोकहित आदि सभी विशेषताओं से मण्डित रहे हैं। इन्होंने सामाजिक विसंगतियों एवं विद्रूपताओं के प्रति आक्रोश व्यक्त किया है।

महाप्राण निराला की प्रसिद्ध कृतियाँ हैं– **अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, अपरा, नये पत्ते, अर्चना, आराधना, गीत गूंज, राम की शक्ति पूजा और सरोज स्मृति**। महाकवि निराला ने उपन्यास, कहानी, आलोचना आदि विधाओं पर भी पर्याप्त लिखा है।

30. रामबक्ष का साहित्यिक व्यक्तित्व स्पष्ट कीजिए। 4

उत्तर :

रामबक्ष राजस्थान के समीक्षकों में अग्रणी माने जाते है। इनका जन्म नागौर जिले के चिताणी गाँव में हुआ। आरम्भिक शिक्षा ग्रामीण विद्यालयों

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें। आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाऐंगे।

में प्राप्त कर इन्होंने मैट्रिक से लेकर एम.ए. तक की शिक्षा जोधपुर में पूरी की। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से पीएच.डी. शोधोपाधि प्राप्त करने के बाद ये पहले रोहतक में प्राध्यापक रहे, फिर जोधपुर विश्वविद्यालय एवं इग्नु विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया। इसके पश्चात् जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली में भाषा संस्थान में प्रोफेसर पद पर कार्यरत रहे हैं। इनका सम्पूर्ण जीवन अध्यापन एवं शोध कार्य में व्यतीत हुआ है। सन्त दादूदयाल के जीवन-चरित्र पर इन्होंने सामयिक प्रसंगानुरूप प्रकाश डाला है। इनका चिन्तन जनवादी चेतना से संवलित दिखाई देता है।

रामबक्ष की प्रमुख रचनाएँ ये हैं- **प्रेमचन्द, प्रेमचन्द और भारतीय किसान, दादूदयाल, समकालीन हिन्दी आलोचना** आदि। इनके लेखन में सरलता, स्पष्टता एवं अभिधात्मकता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

****

सत्र 2020-21 से नये पाठ्यक्रमानुसार सभी कक्षाओं के सभी विषयों की टेक्स्ट बुक एवं सभी प्रकार की सहायक अध्ययन सामग्री विद्यार्थियों को मोबाइल पर व्हाट्सएप द्वारा एवं वेबसाइट www.rbse.online पर उपलब्ध करवायी जाएगी। इसके लिये विद्यार्थियों से किसी भी प्रकार का कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। इसके लिये विद्यार्थियों को किसी भी प्रकार का कोई OTP Verification या Email द्वारा Verification नहीं देना होगा। हमारा व्हाट्सएप नम्बर जानने या अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिये वेबसाइट www.rbse.online पर विजिट करें।

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।